चन्द्र कुँवर बर्त्वाल जन्मशती समारोह 2019

डॉ हरेन्द्र सिंह असवाल

20 अगस्त 1919 को जन्मे हिमवन्त के कवि चन्द्र कुँवर बर्त्वाल का जन्म शताब्दी समारोह उत्तराखंड में कई जगह मनाया गया। मुख्य रूप से उनके पैतृक गाँव मालकोटी में चन्द्र कुँवर बर्त्वाल स्मृति न्यास और कलश संस्था रुद्रप्रयाग द्वारा आयोजित की गई। जिसमें जिला रुद्रप्रयाग के जिला अधिकारी श्री मंगेश घिल्डियाल मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। तल्ला नागपुर के अनेक गाँवों के लोगों ने इस सम्मेलन में बढ़ -चढ़ कर भाग लिया। क्षेत्र की महिलाओं और छात्र-छात्राओं ने कवि की कविताओं का संगीतमय पाठ कर के मन्त्र मुग्ध कर दिया। जिस कवि को आलोचकों, साहित्य के मर्मज्ञों ने भुला दिया हो, जिस कवि को शोधार्थियों ने भुला दिया हो, उस कवि को उस लोक जिसे अपढ़ और निरक्षर कहा जाता हो,ने याद रखा हो ,उसे कोई नहीं मिटा सकता। मुझे भवभूति की याद हो आई जब उसने अपनी तात्कालिक उपेक्षा को देखते हुए लिखा था-:

उत्पत्स्यते च मम कोअपि समान धर्मा,
निरवधि काले विपुला च पृथ्वी।

मेरा जैसा कौन मेरा समान धर्मा कवि है? लोग आज मुझे नहीं जानते लेकिन समय अनन्त है और पृथ्वी बहुत बड़ी, आज नहीं तो कल और यहाँ नहीं तो कहीं और, लोग मुझे जानेंगे और फिर समय आया भवभूति की पहचान बड़े कवियों मे हुई। ठीक यही बात चन्द्र कुँवर बर्त्वाल पर भी लागू होती है। मालकोटी गाँव के लोगों और क्षेत्रीय जनता ने अपने कवि को याद रखा, उन्होंने उसके गीतों को अपनी वाणी दी और ज़िन्दा रखा। उन्होने इतिहास को ज़िन्दा रखा। यह बहुत बड़ा काम उन लोगों ने किया। चन्द्र कुँवर बर्त्वाल स्मृति न्यास और कलश संस्था ने उन पर शोध करने वाले शोधार्थियों को स्मृति चिन्ह और अंगवस्त्रम देकर सम्मानित किया। डॉ योगम्बर सिंह बर्त्वाल ने सभा की अध्यक्षता की और श्री ओमप्रकाश सेमवाल ने मंच का संचालन किया। सम्मानित शोधार्थियों में डॉ हरेन्द्रसिंह असवाल जो दिल्ली से विशेष रूप से पहुँचे थे, भी एक थे। मुख्य अतिथि श्री मंगेश घिल्डियाल ने गढ़वाली में लोगों को संबोधित करते हुए कवि के पंवालिया वाले स्थल को सँवारने का भरोसा देते हुए हर संभव प्रयत्न करने का आश्वासन दिया। बच्चों ने कवि की अनेक कविताओं की गीतात्मक प्रस्तुति की। जिनमें 'अब छाया में गुंजन होगा बन में फूल

खिलेंगे ' आदि गीत गा कर समां बाँध दिया। दूसरा और महत्वपूर्ण सम्मेलन अगस्त्यमुनी की, उनकी कर्म स्थली। जहाँ चन्द्र कुँवर लगभग दो साल तक अध्यापक के रूप में रहे थे, में आयोजित किया गया। इस आयोजन की शुरुआत 1989में श्री पुष्कर सिंह कंडारी जी द्वारा आयोजित की गई थी उसके प्रथम सम्मेलन में स्वर्गीय श्री राजेन्द्र धस्माना, स्वर्गीय श्री अबोधबन्धु बहुगुणा और डॉ हरेन्द्र सिंह असवाल विशेष रूप से आमनत्रित किये गये थे।

इस वर्ष जन्मशाब्दी वर्ष का आयोजन साहित्य अकादमी और चन्द्र कुँवर बर्त्वाल शोध संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में चन्द्र कुँवर बर्त्वाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अगस्त्यमुनि में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में प्रोफेसर हरि मोहन पूर्व विभागाध्यक्ष दिल्ली विश्व विद्यालय, प्रोफेसर करुणा शंकर, प्रोफेसर जय प्रकाश, प्रोफेसर दिनेश चमोला 'शैलेश' प्रोफेसर मृदुला जुगरान, डॉ हरेन्द्र सिंह असवाल और प्रोफेसर के.बी.सब्बारायडु आदि साहित्यकार सम्मिलित हुए। डां राकेश भट्ट ने कवि की कविताओं की संगीतात्मक प्रस्तुति की। डॉ जुगरान ने पन्त से तुलना करते हुए चर्चा की, डॉ हरेन्द्र सिंह असवाल ने पन्त की भाव भूमि को छायावाद से अलग करते हुए चन्द्रकुंवर बर्त्वाल को हिमवन्त का कवि कहा और साथ ही यह भी कहा कि चन्द्र कुँवर बर्त्वाल उत्तराखंड आन्दोलन के दौरान हमारे आन्दोलन के सांस्कृतिक प्रतीक थे। वे सिर्फ प्रकृति के कवि नहीं, प्रकृति के जन जीवन के कवि हैं। छायावाद में प्रकृति तो है लेकिन जन-जीवन नहीं है। उन्होने कवि के छोटे जीवन को नकारते हुए कहा कवि का भौतिक जीवन चाहे छोटा हो लेकिन कवि जीवन हिमालय, मन्दाकिनी, अलकनन्दा, मेघ, काफल पाकू,जीतू बग्ड्वाल, राईमासी के फूलों की तरह अनन्त है कवि के शब्दों में-:

जीवन का है अन्त प्रेम का अन्त नहीं है,
कल्प वृक्ष के लिए शिशिर हेमन्त नहीं है।

डॉ असवाल ने अपने वक्तव्य में कवि की तीन कविताओं 'मैकाले के खिलौने ' "चींटी" और "नारी" को उद्धृत करते हुए कहा कि चींटी पर पन्त जी ने भी, सरल विरल वह काली रेखा, जैसी कविता लिखी लेकिन चन्द्र कुंवर की चींटी सरल विरल नहीं अफ़ग़ानों जैसी हैं इस कविता में चींटी अपने हक़ के लिए दुश्मन से लोहा लेने वाली ख़ूँख़ार, वीर छुरियों से लैस हैं-:

ऊँची-ऊँची खोहों में दर्गम सेमल की
रहती कुछ ख़ूँख़ार चींटियाँ अफ़ग़ानों सी
लम्बी तगड़ी लाल सुर्ख़ बन्दूकें ताने
छुरियाँ लटकाये दर्रों पर पहरा देतीं
देख दूर से आता दुश्मन, मच जाती है-
उनमें बड़े ज़ोर की हल-चल-दर्रे-दर्रे
के आगे हो जातीं जमा लश्करें उनकी।

ये चींटियां छायावादी भाव- बोध से इतर संघर्षशील नव युग की चींटियां हैं जो हर वक्त दुश्मन से लोहा लेने को तत्पर और हमलावर हैं। अपने हक़ के लिए लड़ने वाली हैं।

इसी तरह से दूसरी कविता जो नारी नाम से है, में कवि ने आज के स्त्री विमर्श, नारी चेतना और कह सकते हैं फ़ेमिनिस्ट मूवमेंट की लगती है। एक स्त्री जो मर गई,उसके मरने के तुरन्त बाद पुरुष ने नया स्वाँग रचा, नया विवाह करने की तैयारी की, मूँछें कुतरी, दर्पण में अपना चेहरा बार बार देखा, भाव बनाए और नये कपड़े बनाकर पहन कर नई शादी की तैयारी करने लगा। कवि ने कहा वह स्त्री ऊपर से देख रही है और कह रही है

"हाय, दो ही दिन पहले, जो मेरे थे किसी दूसरे के वे निकले।"

वह सवाल करती है-:

तुम मरते यदि नाथ, और मैं जीवित रहती
तुमने जैसा किया, वही क्या मैं भी करती?

यह सवाल उस पुरूष प्रधान समाज पर एक तमाचे की तरह है।

मैकाले के खिलौने पर नौकरशाही पर जो करारा व्यंग कवि ने किया वह सिर्फ नागार्जुन में ही देखने को मिलता है। इस कविता में कवि अंग्रेज़ परस्त नौकरशाही पर चोट करते हुए लिखता है-:

ये सदा रहेंगे बन सेवक
हर रोज करेंगे झुक सलाम
हैं कहीं नहीं इस दुनियाँ में
मिलते इतने क़ाबिल ग़ुलाम ।

इन कविताओं के अध्ययन से लगता है यह कवि कितना सजग और देशकाल के यथार्थ से परिचित है।

काफल पाकू पक्षी को सुन कर कवि जैसे अपनी बचपन की स्मृतियों में चला जाता है। एक समय था जब उसकी आवाज़ उसे चंचल कर देती थी लेकिन बीमारी ने उसे आज कितना विवश कर लिया, कवि के शब्दों में :

पुनः वही स्वर आज कई वर्षों में दर्शन
पुनः वही स्वर बदला कितना मेरा जीवन
पहले तुम को देख चरण चंचल होते थे
आज उमड़ता है मेरी आँखों में रोदन।

इस तरह से डॉ हरेन्द्र सिंह असवाल ने चन्द्रकुंवर की कविताओं के माध्यम से उन पर गंभीर आलोचनात्मक टिप्पणियां की। उन्होने इतिहास को नए ढंग से समझने के लिए एक दिशा दी। गढ़वाल के इतिहास पर भी डॉ असवाल ने बात की। गढ़वाल का विभाजन और उस पर गुमानी पन्त की कविताओं के सन्दर्भ को भी कविताओं के उद्धरण दे कर बताया। अल्मोडा पर कवि गुमानी पन्त की कविताओं को याद करते हुए उन्होने उसे हिन्दी खड़ी बोली का पहला सनर्थ कवि बताया जिसका देहान्त भारतेन्दु के जन्म से दो साल पहले हो गया था।

अंग्रेज़ों ने अल्मोडे का नक़्शा औरे और करा
देवी का घंटाल ढहाया कोतघर तहां धरा ।
मल्लों महल उजाड़ी नन्दा बंगले घर तहां बने।

से लेकर अंग्रेज़ों की कंगाली और देशी रियासतों की अशिक्षा पर जो कविता गुमानी ने लिखी उसका भी सोदाहरण वर्णन किया

अपने घर से चला फ़िरंगी पहुँचा पहले कलकत्ते
अजब टोप बन्नाती कुर्ती ना कुछ कपड़े ना लत्ते।

आदि अनेक ऐसे मुद्दों पर डॉ हरेन्द्र ने अपनी बात रखी।

सभा की अध्यक्षता करते हुए प्रोफेसर हरि मोहन ने डॉ हरेन्द्र असवाल की बात को आगे बढ़ाते हुए कवि चन्द्रकुंवर बर्त्वाल को छायावाद से अलग भावभूमि का कवि कहते हुए उन्हे नये युग का कवि बताया। प्रोफेसर हरि मोहन ने चन्द्र कुँवर बर्त्वाल की अणुबम वाली कविता पर ध्यानाकर्षित करते हुए कहा कि यह कवि जो बीमारी से जूझ रहा है अणुबम पर कविता लिख रहा है हिरोशिमा और नागासाकी पर उस दौर के किन कवियों ने इस विंषय पर कविता लिखी। जबकि चन्द्र कुँवर 14 सितम्बर 1947 को इस लोक से चले गये। अपने लघु जीवन में वे बहुत बड़ी साहित्यिक विरासत छोड़ गये हैं यह हमारा काम है कि हम उसे सहेजें और समझें।

इस तरह यह छोटी भौतिक उम्र का बड़ा कवि यह गाते-गाते सदा के लिए पंचत्त्व में विलीन हो गया -:

विदा-विदा हे हिरण-तृणों की सुन्दर धरणी।
विदा -विदा हे मानव -पशु की पूजित जननी।
****
और अहा! इस पृथ्वी के फूलों को चुन कर।
अब न तुम्हें पूजूँगा मैं इस नभ के नीचे ।
तुम भी मुझे विदा दो हे प्रभु , हे परमेश्वर।

इस अवसर पर कालेज के प्राचार्य प्रोफेसर जी एस रजवार और संस्था के संयोजक हरीश गुसाईं ने अतिथियों का स्वागत सत्कार और आयोजन को सफल बनाया।

लेखक ज़ाकिर हुसेन दिल्ली कालेज में कार्यरत है।